International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-3 June- 2015 P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

"कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतें व समायोजन का अध्ययन।"

Dr Manoj jhajhria
Principal,Kanoria B.Ed. College
Mukandgarh, jhunjhunu (Rajasthan)

Dr Rajendra Prasad jhajhria
JJT University Research Coordinator
chudela, jhunjhunu (Rajasthan)

प्रस्तावना

शिक्षा वह अभिकरण है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में अपना उचित स्थान पाता है। सच्ची शिक्षा को सही ढ़ंग से ग्रहण करके मन और चेतना को सुसंस्कृत बनाया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही देश, समाज और परिवार की उन्नति संभव है। जापान इसका हमारे सामने प्रत्यक्ष उदाहरण है जहाँ 90 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या का शिक्षित होना ही उसके विकसित होने का परिणाम है। जब तक समाज शिक्षित नहीं होगा तब तक व्यक्ति का शोषण होता रहेगा। दुनिया की कोई भी ताकत उसे नहीं रोक सकती। शिक्षित व्यक्ति ही शोषण का मुकाबला कर सकता है।

शिक्षा मनुष्य में सामाजिक और राजनैतिक चेतना जागृत करती है, जिसकी आज प्रजातान्त्रिक युग में नितान्त आवश्यकता है। शिक्षा वह प्रकाश है जो व्यक्ति के मस्तिष्क पर छाये हुए अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान की ज्योति जलाती है, जिसमें सभी वर्गों का कर्त्तव्य पथ प्रकाशित होता है। शिक्षित व्यक्ति से शिक्षित परिवार और शिक्षित परिवारों से सभ्य और सुसंस्कृत समाज एवं सभ्य समाज से सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण होता है अर्थात् समाज की प्रगति के लिये शिक्षा अनिवार्य है।

शिक्षा से ही सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है। समाज की आन्तरिक रचना एवं सामाजिक व्यवस्था पूर्णतया शिक्षा पर ही निर्भर करती है। शिक्षा केवल समाज की प्रगति ही नहीं करती बल्कि मानव की मानसिक चेतना भी जाग्रत करती है। शिक्षा ही मनुष्य में सोचने समझने की क्षमता बढ़ाती है तथा इसी के माध्यम से ही मानव सही व गलत कार्य के बारे में चिन्तन करता है। वास्तविक शिक्षा के द्वारा ही मानव सही कार्य की ओर अग्रसर होता है और समाज की प्रगति में अपना योगदान देता है। प्लेटो जैसे राजनैतिक दार्शनिक की भी यही मान्यता थी कि शिक्षा के माध्यम से मनुष्य की प्रकृति को सुधारा या बदला जा सकता है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। जन्म के उपरान्त शिशु को लम्बे समय तक पराधीन रहना पड़ता है। उनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति अन्य लोग करते हैं। इसी कारण जन्म के उपरान्त ही आसपास का सामाजिक वातावरण बालक को प्रभावित करने लगता है। व्यक्ति का सामाजिक विकास जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

वर्तमान समय में भारतीय समाज में बालकों में कुसमायोजन की प्रवृत्ति अधिक दिखाई दे रही है। घर की अनुपयुक्त परिस्थितियाँ होने पर समायोजन की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है। घर का अनुपयुक्त वातावरण अध्यापकों का अत्यधिक कठोर एवं असहानुभूतिपूर्ण होना, प्रेरणा का अभाव, अनुपयुक्त एवं मनोवैज्ञानिक विधियों का अभाव, अनुशासन के प्रति अनुचित दृष्टिकोण, व्यक्तिगत विभिन्नताओं की उपेक्षा आदि ऐसे अनेक कारण हैं जिनका विद्यालयी बालकों के समायोजन पर अत्यंत गहन प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समय में इस प्रकार की मनोवृति के निर्माण की अनुकूल दशाओं की रोकथाम के लिए सुसंगठित प्रयास किये जाने चाहिए और इस प्रकार के प्रयत्न किये जाने चाहिए कि बालक अपने स्वयं के बारे में उचित अवधारणा का विकास करें।

शोध का महत्व व औचित्य

इस अध्ययन से पता चलता है कि बालकों का समायोजन उनकी अध्ययन आदतों पर आधारित रहता है। अतः कहा जा सकता है कि बालकों का समायोजन व उनकी अध्ययन आदतें एक दूसरे के पूरक होते हैं। श्रेष्ठ समायोजन के लिए उत्तम अध्ययन आदतों का होना आवश्यक है। बालकों के व्यक्तित्व के विकास के लिए इनका सन्तुलित होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा मनोविज्ञान की भी यह एक विषय वस्तु रही है। अतः शिक्षा–शास्त्रियों के साथ–साथ अध्यापकों एवं अभिभावकों को भी इस संबंध में जानकारी होना परम आवश्यक है। बालकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन व उनके समायोजन के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए इस प्रकार के अध्ययनों की महत्ती आवश्यकता है।

अध्यापकों की दृष्टि से महत्व

अध्यापक बालकों की अध्ययन आदतों व समायोजन के स्तर का अध्ययन करके उनकी समस्याओं का निपटारा उचित ढ़ंग से कर सकता है। पाठ्यक्रम क्रियाओं में भी इन निष्कर्षों के आधार पर महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं।

अभिभावकों की दृष्टि से महत्व

माता–पिता बच्चों की अध्ययन आदतों से संबंधी संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर उनके व्यवहार व आदतों में मनोवांछित परिवर्तन ला सकते हैं एवं आवश्यकतानुसार निर्देशित कर सकते हैं।

अनुसंधान की दृष्टि से महत्व

अब तक बालकों की अध्ययन आदतों का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव पर शोध के प्रयत्न कम ही हुए हैं। अतः यह अध्ययन अपनी दिशा में आगे अध्ययन के लिए उपयोगी बन सकेगा।

बालकों से सम्बंधित उपलब्ध साहित्य के अध्ययन के उपनरांत शोधकर्त्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि बालकों की अध्ययन आदतें एवं समायोजन का अध्ययन इस क्षेत्र में एक नवोदित विषय है। प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता व औचित्य इस बात से भी है कि बालकों की अध्ययन आदतों के आधार पर उनके समायोजन को समझा जा सकेगा।

समस्या कथन

''कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतें व समायोजन का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन।
2. गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन।
3. कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन का अध्ययन।
4. गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों के समायोजन का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों के कुल समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के कुल समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

अध्ययन आदतें

अध्ययन आदतों से तात्पर्य एक विद्यार्थी द्वारा प्रयुक्त उन तरीकों से है जिनके माध्यम से वह औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करता है। इसके लिए उन सभी आदतों का समावेश किया जा सकता है जो एक विद्यार्थी के ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में सहायक होती है।आदतें, बालक के चरित्र का निर्माण करती हैं। वह अपनी आदतों के कारण ही कर्मठ या अकर्मण्य, उदार या स्वार्थी, दयालु या कठोर बनता है। इसीलिए कहा गया है– ''चरित्र आदतों का पुंज है।''

1. **ड्यूक ऑफ वेलिंगटन** का विचार है– ''आदत दूसरा स्वभाव है। आदत, स्वभाव से दस गुणा अधिक शक्तिशाली है।'' आदत, बालक में जीवन के कठिनतम कार्यों के प्रति घृणा उत्पन्न नहीं होने देती अंगों एवं बाह्य परिस्थितियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है। यह सामंजस्य ही समायोजन है।

समायोजन

यह जीवन में लगातार चलने वाली एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने एवं पर्यावरण के मध्य सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। **कोलमैन** के अनुसार, ''समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाइयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है।''

कुसमायोजन

मानव जीवन विकास पर निर्भर है, जब उसे विकास में अवरूद्धता प्रतीत होती है, तो वह दुःखी हो जाता है और असफलताओं को प्राप्त होता है, जिसे उसका कुसमायोजन व्यवहार माना जाता है। असामान्य व्यवहार को भी मनोवैज्ञानिकों ने कुसमायोजन माना है।

कुसमायोजन के मानसिक कारण

जब बालक सामान्य से हटकर व्यवहार करने लगता है, तो समायोजन की शक्ति का ह्रास होने लगता है। अतः विद्वानों ने कुसमायोजन के मानसिक कारणों को निम्नलिखित भागों में बाँटा है–

1. असन्तोष या भग्नाशा या कुण्ठा
2. मानसिक संघर्ष
3. तनाव

शोध कार्य का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में केवल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अध्ययन में 14 से 18 वर्ष के बालक एवं बालिकाएँ कक्षा 9 से 12 तक विद्यार्थी हैं।
2. अध्ययन में प्रमाणित उपकरण प्रयोग में लिए गए हैं।

शोध की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कार्य विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। यह विधि वर्तमान स्थितियों की प्रकृति का स्थूल रूप में वर्णन करते हुए समस्या से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने में सर्वाधिक सक्षम है।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श यादृच्छिक न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के लिये जनसंख्या कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के समस्त 9 वीं से 12 वीं स्तर के विद्यार्थी हैं, जिनकी संख्या हजारों में है, इस संपूर्ण जनसंख्या पर अध्ययन संभव नहीं है, अतः धन, समय व साधनों की सीमितताओं के कारण शोधकर्त्ता ने अध्ययन के अभीष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये झुंझुनूं जिले के 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना है।

उपकरण

1 समायोजन– डॉ. एस. के. पी.

2 **अध्ययन आदत**– एम. मुखोपाध्याय (नई देहली) व डी. एन. सनसनवाल (इन्दौर) द्वारा किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. टी. परीक्षण (ज.मूल्य)

संबंधित साहित्य का अध्ययन

धत साहित्य पर शोधकार्य

अतीत में किये गये शोध ओर विचारों को नवीनतम शोध ओर विचारों से जोड़ने की प्र[िया द्वारा हम ाान को आगे बढ़ाते हैं इस प्र[िया के लिये सुलतापूव्रक काय्र करने हेतु प्रतयेक शोधाप्रि के लिये अतीत को जानना आवश्यक हे जिससे कि जिस विषयवसतु पर शोध काय्र नहीं हुआ हे, उसका अध्ययन किया जा सकें अतः संबंधित साहितय का अध्ययन शोधकाय्र की आधारशिला हें यदि संबंधित साहितय के सव्रेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं करते हैं तो हमारा काय्र प्रीाावहीन एवं महतवहीन होने की सीाावना हें

अग्रवाल, सुभाष चन्द्र (2002) ने ''अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। इस अध्ययन में इन्होंने निष्कर्ष प्राप्त किये–

1. अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के मध्य समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्रों में समायोजन स्तर सामान्य छात्रों के समायोजन स्तर से निम्न पाया गया।

हॉवेल, सूसन, कैसेल, हेरिस (1995)

माता–पिता से संबंध विच्छेद वाले बालकों व बालिकाओं के लिंग एवं आयु के अन्तर के आधार पर समायोजन का अध्ययन।

उद्देश्य– जिन बालकों के माता–पिता का संबंध विच्छेद हो गया है उन बालकों के लिंग एवं आयु के आधार पर समायोजन का अध्ययन।

निष्कर्ष–

1. लड़कियों के माता–पिता का संबंध विच्छेद का संकल्प उच्च था। उन बालकों के लिंग एवं आयु के आधार पर समायोजन का अध्ययन।

2. उच्च सामाजिक, आर्थिक स्तर के माता–पिता के संबंध विच्छेद में लड़कियों की आत्म प्रतिष्ठा ने सहयोग दिया।
3. उच्च आयु वाले बालकों ने छोटे बालकों की तुलना में उच्च शिक्षा के स्तर को दर्शाया।
4. संबंध विच्छेद के पहले व बाद में पिता के वर्चस्व वाले परिवारों में उच्च समायोजन था।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

1 कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या (1)

क्र. सं.	बालक	N	M	SD	SED	t-value	0.05 स्तर सार्थकता
1.	गैर कामकाजी महिला	30	102.73	102.87	26.4	.054	नहीं
2.	कामकाजी महिला	30	101.3	101.51			

प्रस्तुत तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों के लिए परीक्षण मापनी से संबंधित प्राप्ताकों का मध्यमान 102.73 तथा प्रमाणिक विचलन 102.87 प्राप्त हुआ है जबकि कामकाजी महिलाओं के बालकों के लिये उपर्युक्त राशियों के संगत मान 101.3 व 101.51 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर टी का परिकलित मूल्य .054 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता अंश सार्थक स्तर 0.05 स्तर पर तालिका मूल्य 2. 00 से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक भिन्नता नहीं पायी गई इसका कारण है कि गैर कामकाजी महिलाओं की तरह कामकाजी महिलाएं भी काम के समय के बाद अपने बालकों को उचित समय देती हैं।

.2 कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या (2)

क्र. सं.	बालिका	N	M	SD	SED	2	0.05 स्तर सार्थकता
1.	गैर कामकाजी महिला	30	101.1	99.88	25.64	.03	नहीं
2.	कामकाजी महिला	30	100.13	100.24			

प्रस्तुत तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि गैर कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के लिए परीक्षण मापनी से संबंधित प्राप्ताकों का मध्यमान 101.1 तथा प्रमाणिक विचलन 99.88 प्राप्त हुआ है जबकि कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के लिये उपर्युक्त राशियों के संगत मान 100.13 व 100.24 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर टी का परिकलित मूल्य .03 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता अंश के सार्थक स्तर 0.05 स्तर पर तालिका मूल्य 2.00 से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालिकाओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। इसका कारण है कि गैर कामकाजी महिलाओं की तरह कामकाजी महिलाएं भी अपनी बालिकाओं को पर्याप्त समय देकर उनका उचित मार्गदर्शन करती हैं।

परिकल्पना–.3 कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों के कुल समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या (3)

क्र. सं.	बालक	N	M	SD	SED	t-value	0.05 स्तर सार्थकता
1.	गैर कामकाजी महिला	30	41.13	41.21	11.34	0.45	नहीं
2.	कामकाजी महिला	30	46.3	46.52			

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों का तथा कामकाजी महिलाओं के बालकों का मध्यमान क्रमशः 41.13 व 46.3 है। तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 41.21 व 46.52 तथा टी का ज्ञात मूल्य 0.45 प्राप्त हुआ है जो 0.05 स्तर पर कम पाया गया है। स्वतंत्रता अंश के सार्थक स्तर .05 पर टी का मान तालिका 2.00 से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालकों के कुल समायोजन

मेंकोई सार्थक अन्तर नहीं हैं इसका कारण यह है कि कामकाजी महिलाएं भी समय के अनुसार अपने बालकों को चलने योग्य बनाने के लिए अपने समय में से कुछ समय निकाल कर अपने बालकों के मार्गदर्शन में लगाती हैं।

परिकल्पना–4 कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के कुल समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या (4)

क्र. सं.	बालिका	N	M	SD	SED	t-value	0.05 स्तर सार्थकता
1.	गैर कामकाजी महिला	30	45.8	45.94	12.2	0.21	नहीं
2.	कामकाजी महिला	30	48.4	48.56			

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि गैर कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं का तथा कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं का मध्यमान क्रमशः 45.8 व 48.4 है। तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 45.94 व 48.56 तथा ज का मान ज्ञात मूल्य 0.21 प्राप्त हुआ है। जो कि स्वतंत्रता अंश के सार्थक स्तर 0.05 स्तर पर तालिका मूल्य 2.00 से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओं के बालिकाओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर समूह के कुल समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। इसका कारण यह है कि गैर कामकाजी महिलाएं अपना पूर्ण समय परिवार की देखभाल में लगाती हैं लेकिन कामकाजी महिलाएं भी अपनी बालिकाओं को उचित मार्गदर्शन देने के मामले में गैर कामकाजी महिलाओं से किसी तरह से कम नहीं हैं।

उपलब्धियों के आधार पर सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम इस बात की पुष्टि करते हैं कि कामकाजी महिलाएं भी गैर कामकाजी महिलाओं की तरह परिवार की सही ढ़ंग से देखभाल कर पाती हैं। जिन परिवारों में कामकाजी महिलाएं होती हैं उन परिवारों के बालक व बालिकाओं की शैक्षिक सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन क्षमता गैर कामकाजी महिलाओं के परिवारों के समान होती है और अध्ययन आदतों में भी कोई अन्तर नहीं होता।

1. बालक देश का कर्णधार हैं व माता–पिता के बुढ़ापे की लाठी हैं। अतः कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाएं कुछ समय अपने बालकों के लिए निकालें। जिससे समायोजन के उच्च प्रतिमान स्थापित किए जा सकें।
2. माता–पिता, पारिवारिक सदस्य, शिक्षक व समाज के व्यक्ति बालकों का पूर्णरूपेण ध्यान रखें व उनके समक्ष एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत करें। उन्हें सही दिशा निर्देश निर्देशित करें, उनका मार्गदर्शन करें।
3. परिवार का वातावरण अच्छा चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी किसी भी समस्या का समाधान कर ले व उन्हें किसी तरह का तनाव न हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी पुस्तकें एवं संदर्भ ग्रन्थ

01 अरोड़ा, रीता. मरवाहा, सुदेश शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन (2005)
02 अस्थाना, विपिन मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
03 उपाध्याय, विनोद कुमार, भार्गव, अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण,सुनिता, त्यागी, एम. पी. सिंह जयपुर, अरिहंत शिक्षा प्रकाशन (2006)
04 कपिल, एच. के. अनुसंधान विधियाँ, आगरा, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस (2007)
05 जायसवाल, सीताराम शिक्षा विज्ञान कोष, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (1967)
06 नन शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त, मेरठ, राजेश पब्लिशिंग हाऊस (1982)
07 भाटिया, हंसराज समाज मनोविज्ञान, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (1959)
08 माथुर, एस. एस. शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मं(1969)
09 राय, पारसनाथ एवं राय, सी. पी. अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मीनाराय अग्रवाल (2009–10)
10 र्मा, रामपाल सिंह मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर(2004–05)
11 वर्मा, रामपाल सिंह अधिगम का मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर (2005)
12 वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी. एन आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर (2000)
13 वर्मा, प्रीति मनोविज्ञान एवम् शिक्षा में सांख्यिकी, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर (1976)
14 श्रीवास्तव, सूर्यनारायण शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, यंगमैन प्रकाशन
15 श्रीवास्तव, डी. एन. एवं वर्मा, प्रीति बाल मनोविज्ञान : बाल विकास, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर (1977)

16 शर्मा, शिवचरण, पारीक, सुशीला अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवम् शिक्षण अलवर, सरस्वती प्रकाशन (2007)
17 सिन्हा, जे. सी. शिक्षण अधिगम का वैज्ञानिक आधार, जयपुर, श्री कविता प्रकाशन
18 सिंह, एच. पी., दुबे, श्रीकृष्ण शिक्षण और अधिगम के मनोसामाजिक आधार, आगरा, राधा प्रकाशन मंदिर (2006)
शर्मा, आर. के.
19 सुखिया, एस. पी. शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, आगरा,विनोद पुस्तक मंदिर (1994–95)
20 पारसनाथराय अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल हॉस्पिटल रोड़, आगरा (2005)
21 शर्मा, आर. ए. शिक्षा अनुसंधान
22 भार्गव, महेश आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,एच. पी. भार्गव पब्लिशिंग हाऊस आगरा(1999)
23श्रीवास्तव, सी. बी. शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, श्री कविता शर्मा, माताप्रसाद प्रकाशन (नवीन संस्करण)
24 पाठक, पी. डी. शिक्षा मनोविज्ञान इकतीसवां संस्करण (2005) विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2
25 प्रतियोगिता विकास अप्रेल, 1994
26 प्रतियोगिता दर्पण सितम्बर, 1987

Books & English References

1 Young, K. Social Attitude, Holt & Co. (1931).
2 Wadhwa A Study of some background factors of graduate Tearcher's adjustment ph. D. (Edu), Meerut Uni. (1987)
3 Agarwal, J. C. Research in Education : An Interoduction, New Delhi, Arya Book Depot. (1966)
4 Agarwal, J. C. Major recommendation of the Education Commission (1967)
5Allport, G. W. Pattern and growth in personality, Newyor Holtrinehart, Winston (1961)
6 Best, J. W. Research in Education, New Delhi, Prentice Hall Pvt. Ltd. (1983)
7Babel, M.A Study of Adjustment of Foreign Students Studying in the Universities of Rajasthan, Ph. D. Edu. M. Sukhadiya Uni. (1986)
8 Breg, W. R. Educational Research, In Interoduction New York Mekare (1956)

JOURNALS

1- Dissertation Abstract International July-Aug (1947)
2- Encyclopedia of Education.
3- Indian Educational Abstract Vol. III No. 2, July (2003)
4- M. B. Buch, Educational Research Survey; iii, iv, v, New Delhi, N.C.E.R.T. (1972-1992)
5- 'The wall street Journal', March 5 (1998)
6- British Journal of Education Psychology, vol. 118 (1941)
7- Dictionary of Education, New York, Megraw hill (1973)
8- Revind Attitude Journal of Education Research, vol. 56 (1963)
9- The New Dictionary of Psychology, London, P. Opas.
10-International Education Journal, Dec. 2005
11-Journal of Research in International Education (JRIE)
(2006)
12-Educational Herald, vol. 35, No. 3 July-September (2006)
13-Educational Herald (A quarterly Journal of Education Research) vol. 36, No. 1 Jan-March (2007); vol. 38, NO. 4, Oct-Dec. (2009), CTE Jodhpur.
14-IFE Psychologia: An International Journal, vol. 6(2) (1998)
15-Journal of Indian Education, vol. 30, 33, No. 1 May-2004, Feb-2005, May-2007, New Delhi, N.C.E.R.T.